लिडा न्यूबेरी



नन्हीं जलपरी

नन्हीं जलपरी



लिंडा न्यूबेरी

चित्रांकन
बी विली

अनुवाद
अरविन्द गुप्ता

स्कॉलास्टिक
न्यूयार्क टोरंटो लंदन ऑकलैण्ड सिडनी
मेक्सिको सिटी नई दिल्ली हांगकांग ब्यूनस आयर्स

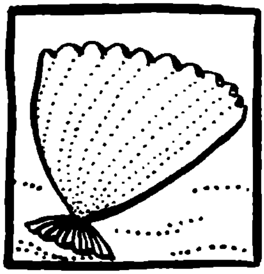
पहला हिंदी संस्करण : जनवरी 2002

स्कॉलास्टिक इंडिया (प्रा.) लिमिटेड
29 उद्योग विहार, फेज़-1, गुड़गाँव-122016
द्वारा प्रकाशित।

स्कॉलास्टिक इंडिया भारत में स्कॉलास्टिक कार्पोरेशन की एक उप-संस्था है। भारत के अतिरिक्त कॅनडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, यूनाइटेड किंगडम, मेक्सिको, हांगकांग और अर्जेंटीना में भी स्कॉलास्टिक कार्पोरेशन की उप-संस्थाएँ हैं।

ISBN: 81-7655-094-9

मूल्यः 50 रुपये



सोचो तो!

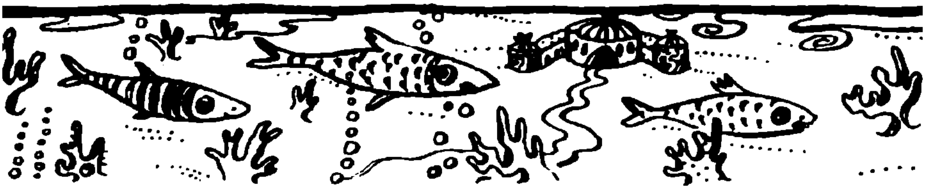
दूर, बहुत दूर समुद्र में जहाँ पानी आसमान से भी नीला हो, और पारदर्शी काँच से भी अधिक स्पष्ट! कल्पना करो उस स्वच्छ, निर्मल पानी में तैरने की और समुद्र की उन अथाह गहराइयों में गोते लगाने की जहाँ पहले कभी कोई इंसान न गया हो। यहाँ पर एक क़तार में कई छोटे-छोटे

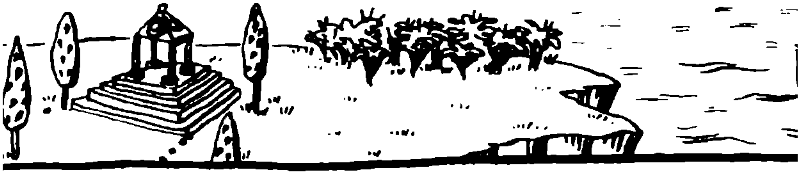
बग़ीचे हैं—हरेक बग़ीचा सीपियों और शंखों से सजा है। बाग़ में समुद्री पौधे और खरपतवार लगे हैं जो पानी के साथ बालों की तरह लहराते हैं।

यहाँ एक संगमरमर की मूर्ति के पास एक नन्हीं जलपरी बैठी है। उसके बाग़ में मछलियाँ इस तरह आती-जाती हैं जैसे हमारे यहाँ चिड़ियाँ। वहाँ पानी में हमेशा एक मधुर संगीत गूँजता है। फिर भी जलपरी उदास है। वह न तो मछलियों को देखती है और न ही पानी का हल्का-हल्का संगीत सुनती है।

"काश मैं पंद्रह साल की होती!" वह एक ठंडी आह भरती है।

इस जलपरी की पाँच बड़ी बहनें हैं। वे सभी राजकुमारियाँ हैं और मेर-राजा की पुत्रियाँ हैं। राजा



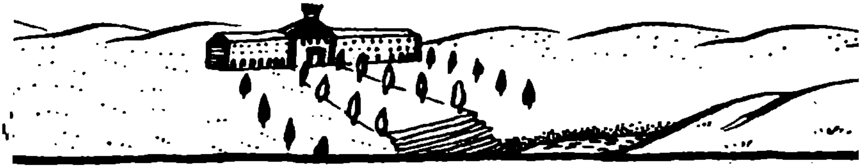


का आलीशान महल मूँगों, मणियों और मोतियों से मढ़ा है। राजकुमारियों की माँ की मृत्यु हो गई है। नन्हीं जलपरी को छोड़ कर बाक़ी राजकुमारियाँ जो भी चाहती थीं वह सब कुछ उनके पास है।

नन्हीं जलपरी पानी के ऊपर मनुष्यों का संसार देखना चाहती है।

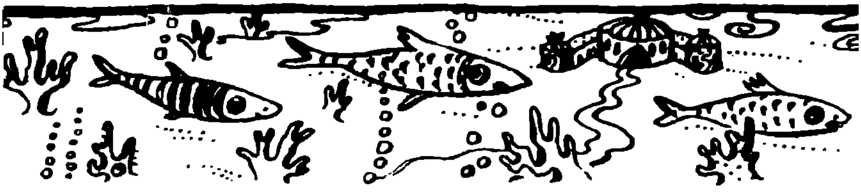


उस के लिए किसी भी जलपरी को पंद्रह साल का होना ज़रूरी है। तब वह पानी की सतह



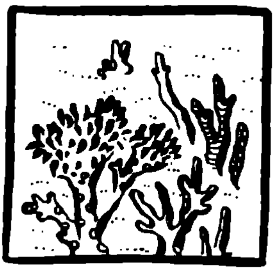
पर तैर कर जा सकती है और किसी पत्थर पर बैठकर, या किसी रेतीले तट पर लेटकर जो चाहे देख सकती है, सुन सकती है। उसकी सभी बहनों की उम्र अब पंद्रह से ज़्यादा है, इसलिए उनमें से हरेक यह यात्रा कर चुकी है। यात्रा के दौरान उन्होंने शहर और महल, गाड़ियाँ और दो पैरों पर चलते इंसानों को देखा था। सब कुछ देखने के बाद उन्हें लगा कि पानी के अंदर की दुनिया ही सबसे बेहतर है और वह वहीं सुखी रहेंगी।

परंतु नन्हीं जलपरी बस अपनी मूर्ति और अपने सपनों में ही खोई है। वह मूर्ति एक खूबसूरत नौजवान की है। मूर्ति उसे समुद्र की तलहटी में पड़ी मिली थी। शायद वह किसी डूबे हुए जहाज़ में से आई थी। नन्हीं जलपरी ने उसे अपने बाग़ में





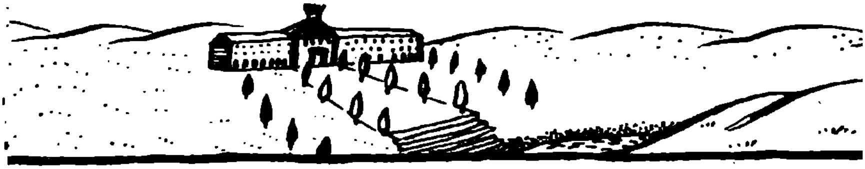
सजा दिया था। कभी-कभी वह मूर्ति के सामने गाती है, क्योंकि उसकी आवाज़ बहुत ही मीठी है। वह संगमरमर के बने चेहरे को निहारती है और कल्पना करती है कि शायद ऊपर बसी इंसानों की दुनिया में उस मूर्ति से मिलता-जुलता कोई चेहरा हो।



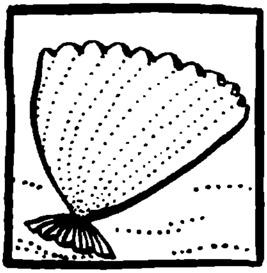
बहुत दिनों बाद उसका जन्मदिन आता है!

"अलविदा!" उसने अपनी बहनों और दादी से कहा। उसके बाद वह इंसानों की दुनिया में अपनी पहली यात्रा के लिए रवाना हुई। उसने पानी की





सतह से ऊपर झाँका। ऊपर क्या होगा, इसका उसे कोई अंदाज़ा नहीं है। शाम का समय था और आसमान एकदम गुलाबी रंग का था। फिर उसे तीन मस्तूलों वाला एक जहाज़ दिखाई दिया और वह तैरते हुए उसकी ओर गई। हवा बिलकुल नहीं चल रही थी और जहाज़ अपनी जगह पर शांत खड़ा था। नन्हीं जलपरी ने जहाज़ की खिड़कियों से झाँका और वहाँ उसे लोग, लालटेनें और मेज़ पर सजा खाना दिखाई दिया।



उसकी निगाहें सीधे एक राजकुमार की ओर गयीं। राजकुमार को देख कर उसे अपनी मूर्ति याद आई। ऐसा लग रहा था जैसे आज राजकुमार के जन्मदिन के लिए ही पार्टी आयोजित की गई हो।

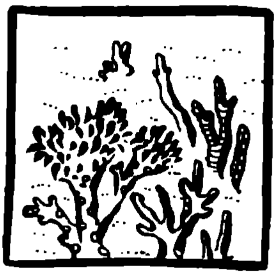
'उसका जन्मदिन और मेरा भी!' जलपरी ने सोचा।

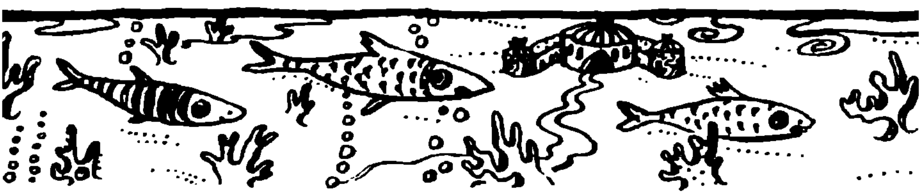
आधी रात को लालटेनों की रोशनी कम कर दी गई और सारे मेहमान सोने चले गए। अचानक समुद्र में ऊँची लहरे उठने लगीं और जहाज़ हिचकोले खाने लगा। जहाज़ के पालों में तेज़ हवा भर गई और आसमान में गहरे काले बादल घिर आए। जलपरी समुद्री मौसम को अच्छी तरह समझती थी। एक भयंकर तूफ़ान के आसार उसे साफ़ नज़र आ रहे थे। जलपरी के लिए तो तूफ़ानी समुद्र एक



नहीं! उसे मरना नहीं चाहिए!

जलपरी ने डुबकी लगाई और डूबते हुए राजकुमार को पकड़ लिया। उसे एक पानी की भँवर समुद्र के अंदर खींच रही थी। राजकुमार की आँखें बंद थीं और उसके हाथ-पैर ढीले पड़ चुके थे। जलपरी पूरा ज़ोर लगाकर तैरी और अपनी पूँछ की सारी ताक़त लगाकर अंत में पानी की सतह तक पहुँची। सारी रात नन्हीं जलपरी, राजकुमार को उठाए रही। अंत में उसके हाथ और पूँछ थकान से



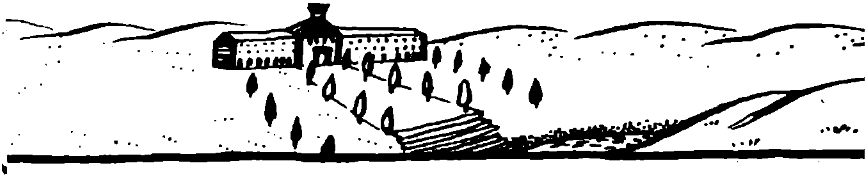




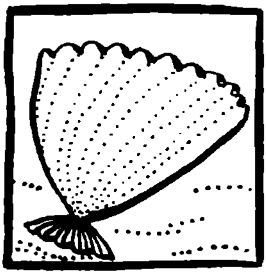
दर्द करने लगे।

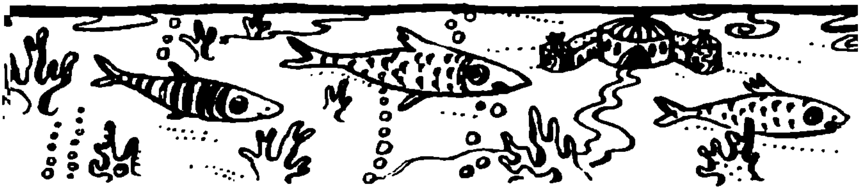
सुबह होते ही सूर्य की पहली किरणें राजकुमार के चेहरे पर पड़ीं। जलपरी ने राजकुमार का चेहरा चूमा और उसके जीवन के लिए प्रार्थना की। जलपरी ने राजकुमार के सामने वही गीत गाए जो वह बाग़ में मूर्ति के सामने गाती थी। वह लगातार तैरती रही, परंतु उसे यह नहीं पता था कि वह अब कहाँ जाए।

अंत में उसे ज़मीन दिखाई दी—बर्फ़ से ढँके पहाड़, हरे जंगल और एक मंदिर दिखाई दिया। उसने राजकुमार को किनारे पर लाकर उसे रेत पर लिटा दिया। थोड़ी देर बाद लोग मंदिर में आने लगे। एक काले बालों वाली लड़की ज़ोर से चिल्लाई और तट की ओर दौड़ी। कुछ ही देर में वहाँ एक भीड़ इकट्ठी हो गई। किसी ने राजकुमार को पेट के बल



लिटा दिया, किसी ने उसके गालों को थपथपाया। लड़की ने उसके हाथों को सहलाया। बहुत देर तक जलपरी, यह सारा नज़ारा पत्थरों के पीछे से छिप कर देखती रही। कुछ देर बाद राजकुमार को हल्की-सी खाँसी आई। उसने आँखें खोलीं और वह उठ कर बैठ गया। उसे होश आया! लोगों को राहत मिली और वे ख़ुशी से चिल्लाने लगे। जब राजकुमार के शरीर में कुछ जान आई तो वह उस लड़की की ओर देखकर मुस्कुराया जो उसका हाथ सहला रही थी। उसने दूसरे लोगों से भी बातचीत की। अंत में लोग







उसे एक चादर उढ़ा कर वहाँ से ले गए।

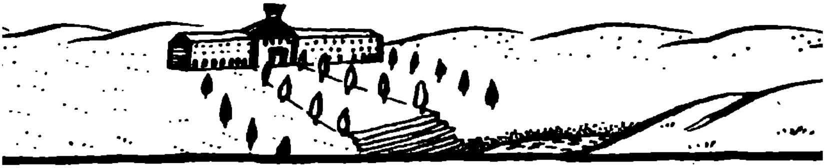
नन्हीं जलपरी ख़ुश थी कि राजकुमार की जान बच गई। वह दुखी इस बात से थी कि राजकुमार बाक़ी लोगों पर तो मुस्कुराया, परंतु उसने जलपरी की ओर देखा तक नहीं। शायद राजकुमार को यह भी नहीं पता था कि असल में उसे किसने बचाया था।

वह मेर-राजा के महल में वापस लौट आई। अब वह एकदम शांत रहती और हमेशा गहरे सोच में डूबी रहती।

"अच्छा!" उसकी बहनों ने पूछा, "तुम कहाँ गई थीं? तुमने क्या-क्या देखा? क्या किया?"

परंतु नन्हीं जलपरी अपने बाग़ में अकेले जाकर बैठ गई। जलपरियों के आँसू नहीं बहते, नहीं तो वह ज़रूर रो रही होती।





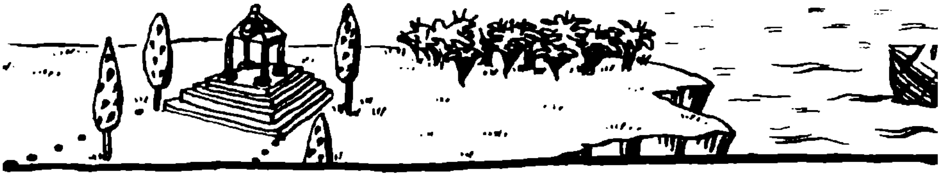
आने वाले दिनों में वह कई बार मंदिर के पास के तट पर तैर कर गई। उसने लोगों को आते-जाते देखा, उन्हें बातचीत करते हुए सुना, परंतु उसे एक बार भी वह सुंदर राजकुमार दिखाई नहीं दिया।



अंत में वह और अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकी। एक दिन यह राज़ उसने अपनी एक बहन को बता ही डाला।

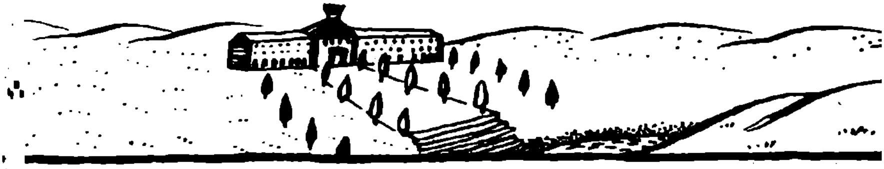
"मैं तुम्हारी बात समझ रही हूँ! अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें राजकुमार का महल दिखा सकती



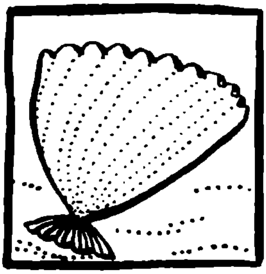


हूँ!" बहन ने कहा। महल समुद्र के तट पर ही बसा था। वह चमकीले पत्थरों का बना था और उसमें संगमरमर की एक बड़ी-सी सीढ़ी थी। पास ही में मूर्तियाँ, फ़व्वारे और गुम्बदें थीं। वहाँ एक बाग़ भी था जहाँ के फूल और हरियाली नन्हीं जलपरी को अपने समुद्री बाग़ की खरपतों से कहीं अच्छी लगी।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए वह इंसानों की दुनिया की तरफ़ और अधिक आकर्षित होती गई। वह समुद्र की सतह से उठ कर महल को निहारती और अपने प्रिय राजकुमार की एक झलक पाने के लिए घंटों राह देखती रहती। एक दिन हिम्मत बटोर कर वह नदी के मुहाने को तैर कर संगमरमर की छत के पास जा पहुँची। अक़सर वह राजकुमार को



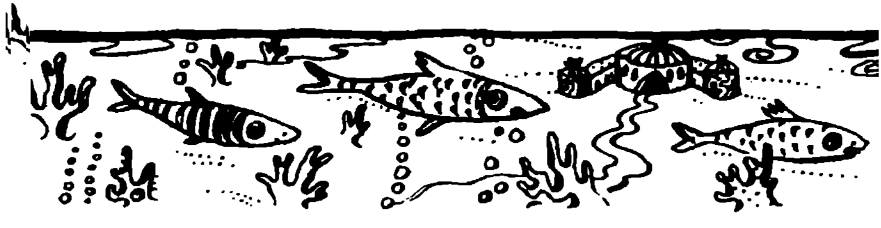
वहां पर देखती—बाग़ में घूमते हुए, नौका विहार करते हुए या फिर अपने मित्रों से बातें करते हुए।



एक दिन तैर कर वापस आने के बाद उसने अपनी दादी से सलाह माँगी।

"अगर इंसान पानी में नहीं डूबें," उसने पूछा, "तो क्या वह हमेशा-हमेशा के लिए ज़िंदा रहते हैं? या वह भी हमारी ही तरह तीन सौ साल बाद मर जाते हैं?"

"हाँ, वह भी मरते हैं," दादी ने कहा, "और

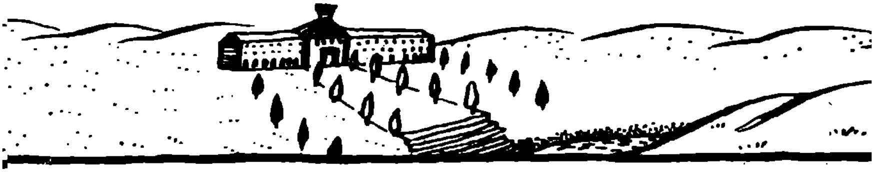




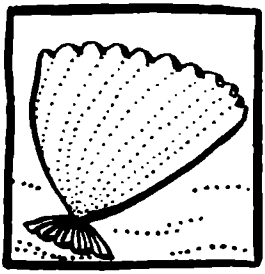
उनका जीवनकाल हमसे कहीं कम होता है। जब हम मरते हैं तो हम समुद्री फेन बन जाते हैं और इस तरह हमारा अंत होता है। परंतु इंसानों की आत्मा अमर होती है—उनकी आत्मा हमेशा-हमेशा के लिए सितारों में और उन जगहों पर रहती है जो हम केवल सपने में देख सकते हैं!"

"हमारी आत्मा अमर क्यों नहीं होती?" नन्हीं जलपरी ने पूछा। "मैं इंसान बनने के लिए कुछ भी करने को तैयार हूँ! मैं अपनी आयु के तीन सौ साल देने को तैयार हूँ, अगर मुझे उन सितारों में सदा के लिए रहने का मौक़ा मिल सके!"

"ऐसी बातें मत करो, नादान लड़की!" दादी ने उसे झिड़कते हुए कहा, "समुद्र के नीचे हमारी हालत काफ़ी अच्छी है।" फिर उन्होंने एक छोटी

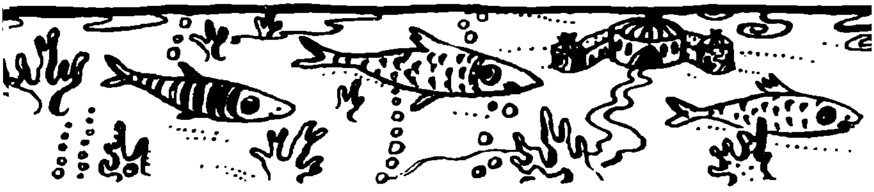


ऐंजिल मछली को अपने पास बुलाकर उसे अपने हाथ से खाना खिलाया।



"क्या ऐसा कोई तरीक़ा नहीं है जिससे हमारी आत्मा अमर हो सके?" नन्हीं जलपरी अपने सवाल का उत्तर पाने के लिए अड़ी रही।

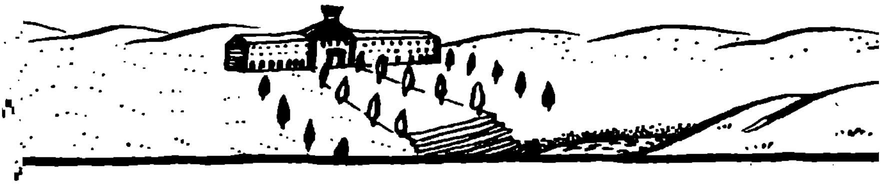
"इसका केवल एक तरीक़ा है," दादी ने कहा, "अगर तुम ऐसा कर सको कि कोई आदमी तुम्हें प्यार करे, और तुमसे शादी करने को बेहद उत्सुक हो, और तुम्हारे साथ सारी ज़िंदगी बिताने को तैयार हो—तब वह अपनी आत्मा सहेज कर रखने के



साथ-साथ तुम्हारी आत्मा को भी अमर बना सकता है।" फिर दादी हँसीं और उन्होंने पूँछ की तरफ़ इशारा किया। "लेकिन यह कैसे हो सकता है? हमारी पूँछ, जो हमारी ख़ूबसूरती की सबसे सुंदर निशानी है, उसे इंसान एकदम राक्षसी समझते हैं। वह तुम्हें तभी सुंदर समझेंगे जब पूँछ की जगह तुम्हारे दो डंडों जैसे पैर होंगे।"

"वाक़ई," नन्हीं जलपरी ने कहा और वह शल्कों से बनी अपनी हरी पूँछ को देखने लगी।

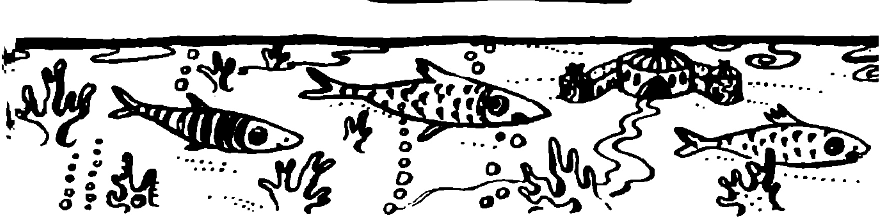
"अब तुम कुछ ख़ुश रहो!" दादी ने उसे हिदायत दी, "देखो, आज रात को बहुत बड़ा जलसा होने वाला है और उसमें तुम्हें गाना है। हमें अपने तीन सौ साल किस प्रकार ख़ुशी-ख़ुशी बिताने चाहिए, यह हमें अच्छी तरह पता है।"



उस रात राजकुमारी ने गाना गाया। उसकी मधुर आवाज़ की हरेक ने तारीफ़ की। उसकी आवाज़ किसी भी इंसान की आवाज़ से अधिक मधुर थी। जलसे के लिए महल को रंगीन रोशनी से सजाया गया था। सभी तरह की मछलियाँ— छोटी और बड़ी, रंग-बिरंगी मछलियाँ मेले को देखने के लिए आयी थीं।

मेले में सभी नाच रहे थे, हँस रहे थे और खा रहे थे—नन्हीं जलपरी को छोड़ कर बाक़ी सभी। वह बस समुद्र के ऊपर अपने राजकुमार का सपना







देख रही थी। अंत में वह महल छोड़ कर अपने बग़ीचे में जाकर बैठ गई।

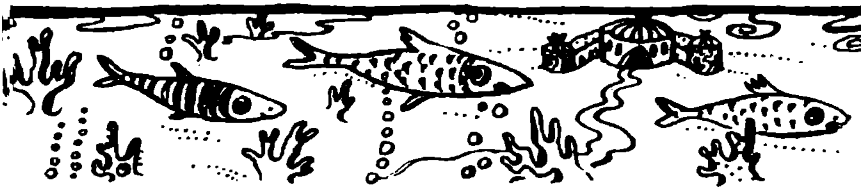
मैं उससे प्यार करती हूँ, फिर भी उसे यह तक पता नहीं कि मैं ज़िंदा हूँ, उसने सोचा। मैं उसके साथ चंद मिनट बिताने के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार हूँ!

सिर्फ़ एक व्यक्ति था जो उसकी कुछ मदद कर सकता था। वह थी समुद्री-चुड़ैल, जिससे सब लोग डरते थे। परंतु नन्हीं जलपरी अपने राजकुमार का प्रेम जीतने के लिए कोई भी जोखिम उठाने को तैयार थी।

अँधेरे में ही नन्हीं जलपरी, रेत के टीलों को लाँघती और पानी की भँवरों को पार करती हुई गई। वहाँ एक अजीब-से जंगल में, समुद्री-चुड़ैल एक गुफा में रहती थी। जंगल के पेड़ और पौधे आधे-मनुष्य और

आधे–जानवर थे। वे नन्हीं जलपरी को बुरी निगाहों से देखने लगे और झुक कर उसे छूने लगे। उसे उनके बीच से गुज़रने में डर लगा और वह रुक कर सोचने लगी। कुछ के हाथों में डूबे हुए नाविकों की हड्डियाँ थीं और कुछ अपने हाथों से नन्हीं जलपरी को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। एक बार तो वह सहम गई और उसने वापस जाना चाहा। फिर उसने अपने राजकुमार को याद किया और आँखें बंद करके तीर की तरह उन राक्षसी पेड़ों के चंगुल से निकलकर गुफा तक पहुँची।







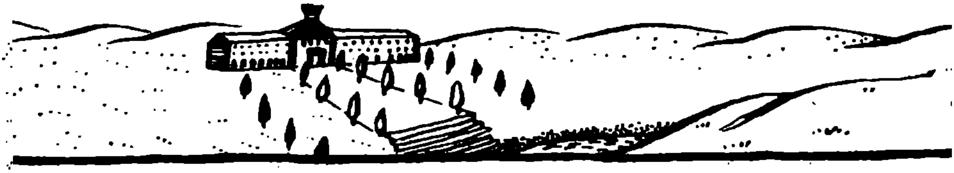
चुड़ैल के बालों से समुद्री साँप लटक रहे थे। बहुत-से साँप चारों ओर रेंग रहे थे।

"मुझे मालूम है कि तुम क्यों आई हो!" उसने जलपरी को देखते ही कहा, "तुम जो कुछ चाहती हो वह तुम्हें ज़रूर मिलेगा, क्योंकि उससे तुम तमाम परेशानियों में फँसोगी। तुम अपनी पूँछ की जगह दो बदसूरत डंडे चाहती हो, जैसे इंसानों के पैर होते हैं। तुम चाहती हो कि राजकुमार तुम्हारे प्रेम में फँस जाए जिससे तुम्हारी आत्मा सदा के लिए अमर हो जाए। क्यों?"

"हाँ," जलपरी ने कहा।

यह सुनकर समुद्री-चुड़ैल इतने ज़ोर से हँसी कि उसके बालों के साँप गिर गए और समुद्र की चिकनी तलहटी पर रेंगने लगे।

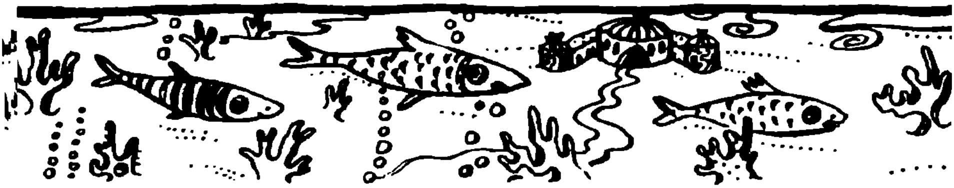
"मैं तुम्हारे लिए एक काढ़ा बनाऊँगी," चुड़ैल

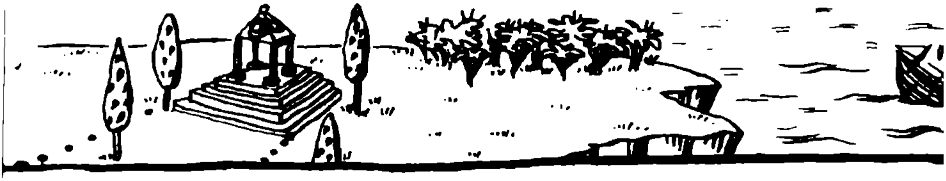


ने कहा, "फिर तुम समुद्र के तट पर तैर कर जाना और राजकुमार के महल के पास जाकर उसे पी लेना। फिर तुम्हारी पूँछ सिकुड़ जाएगी और दो हिस्सों में बँट जाएगी। इंसान इन्हें पैर कहते हैं। फिर तुम ज़मीन पर इन दोनों पैरों से चल सकोगी। परंतु इसमें तुम्हें काफ़ी तकलीफ़ होगी! ऐसा लगेगा जैसे कोई धारदार तलवार तुम्हें काट रही हो। चलते समय तुम्हें ऐसा महसूस होगा जैसे कि तुम तेज़ चाकुओं पर चल रही हो। क्या तुम यह बेवकूफ़ी करना चाहती हो, जब कि तुम उस आदमी को बिलकुल जानती तक नहीं हो?"

"हाँ," जलपरी ने काँपते हुए कहा।

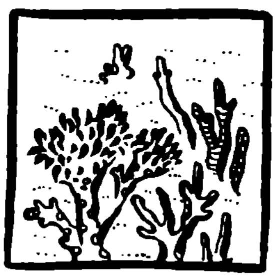
चुड़ैल फिर घिनौने ढंग से हँसी। "हाँ, मुझे पता था। तुम दुबारा फिर कभी भी जलपरी नहीं

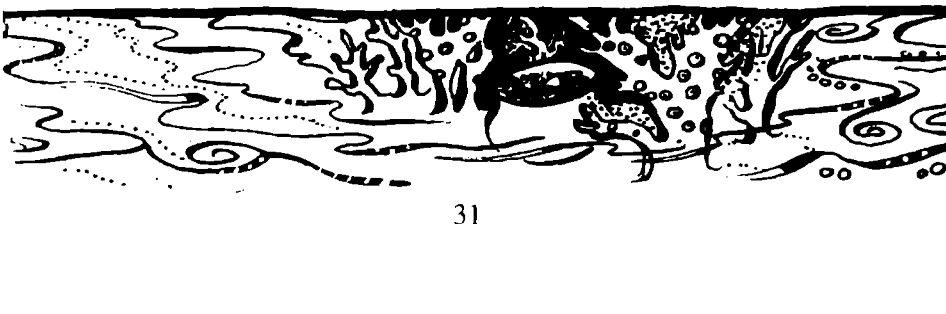




बन सकोगी। तुम अपनी बहनों और दादी और अपने पिता के महल को दुबारा फिर कभी नहीं देख सकोगी। और अगर राजकुमार तुम्हें सबसे अधिक प्यार नहीं करेगा तो फिर तुम्हारी आत्मा कभी भी अमर नहीं होगी! अगर राजकुमार किसी और से शादी करेगा तो तुम्हारा दिल टूट जाएगा, और फिर अगली सुबह तुम समुद्री फेन में बदल जाओगी। क्या तुम फिर भी यह सब करना चाहोगी?"

"हाँ," जलपरी ने काँपते हुए कहा।



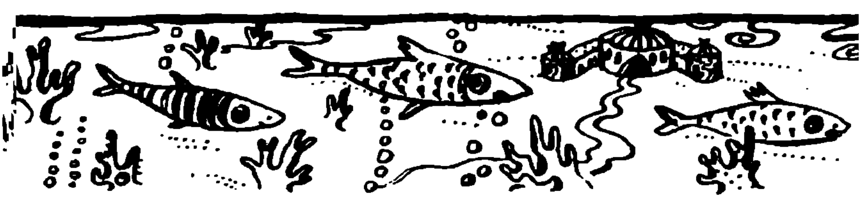


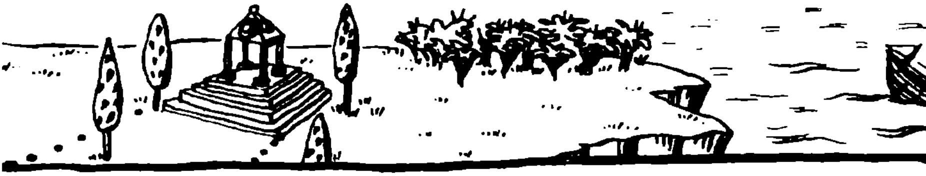
"तब," चुड़ैल ने कहा, "पहले तुम्हें मेरा हिसाब चुकाना होगा। तुम्हारी जैसी सुरीली आवाज़ सारी दुनिया में किसी और की नहीं है। इस काम के लिए तुम्हें मुझे अपनी मधुर आवाज़ देनी होगी। तुम अपनी आवाज़ से राजकुमार को अपनी मोह-माया में नहीं फँसा पाओगी।"

"परंतु अगर मेरी आवाज़ ही चली जाएगी," नन्हीं जलपरी ने कहा, "तो फिर मेरे पास बचेगा ही क्या?"

"तुम्हारा सुंदर चेहरा," चुड़ैल ने ताना कसते हुए कहा, "तुम्हारा सुंदर शरीर। तुम्हारी सजीव आँखें। क्या ये कम नहीं हैं किसी आदमी को फँसाने के लिए? क्या तुम अपना इरादा बदल रही हो, क्यों? पर अब यह ठीक नहीं है।"

"मैं इस सबके लिए राज़ी हूं!" नन्हीं जलपरी

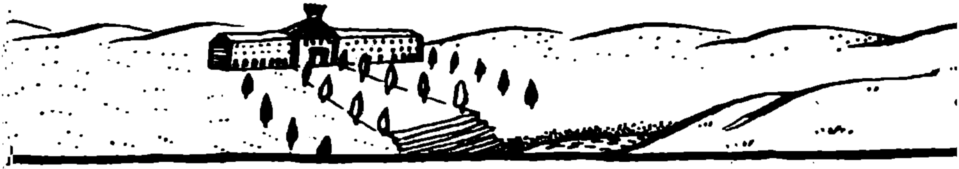






ने चुनौती को स्वीकार करते हुए कहा।

उसके बाद चुड़ैल हँसी और उसने कुछ साँपों को लेकर एक बड़ी कढ़ाई को साफ़ किया। फिर उसने अपनी छोटी उँगली को काट कर उसका ख़ून कढ़ाई में गिराया। उसने कढ़ाई में और बहुत-सी चीज़ें डालीं —समुद्री घोंघे, सड़ी खरपत और मेंढक की गंदगी। कुछ देर में ही कढ़ाई में से बदबूदार भाप निकलने लगी जो हँसते हुए चेहरों जैसी दिख रही थी। अंत में जाकर काढ़ा तैयार और साफ़ हुआ।



"सब कुछ तैयार है!" चुड़ैल ने काढ़े को सूँघते हुए कहा। उसने काढ़े को एक शीशी में उँड़ेला। "अब मेरे काम की क़ीमत चुकाओ।"

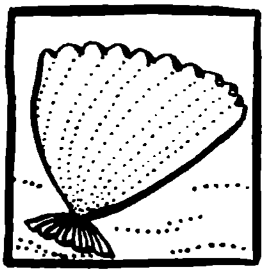
चुड़ैल ने अपनी गठीली उँगली से नन्हीं जलपरी के मुँह की ओर इशारा किया। उसी क्षण जलपरी की जीभ जलने लगी और सिकुड़ कर ग़ायब हो गई। जलपरी ने बोलने की बहुत कोशिश की परंतु उसके मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकली।

"अब तुम जाओ," चुड़ैल ने कहा, और फिर वह साँपों और मेंढकों के बीच में आराम करने के लिए लेट गई।

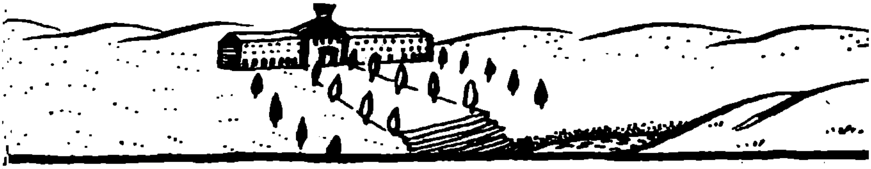
नन्हीं जलपरी जल्दी से तैरकर अपने पिता के महल में वापस पहुँची। उसने शीशी को कस कर पकड़े रखा। महल में अभी भी अँधेरा था और



सभी लोग सो रहे थे। नन्हीं जलपरी ने महल में घुसने की हिम्मत नहीं की, उसकी बजाए वह अपनी बहनों के बग़ीचों में गई और उसने हरेक बग़ीचे से एक-एक फूल तोड़ा। जलपरियाँ आँसू नहीं बहा सकतीं, नहीं तो नन्हीं जलपरी इस समय सुबक-सुबक कर रो रही होती।



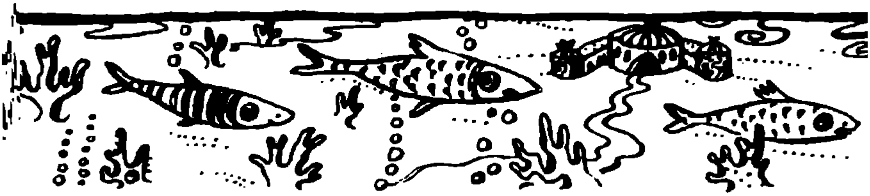
जब वह तैर कर राजकुमार के महल के पास पहुँची तब उस समय भी सूरज उगा नहीं था। उसने संगमरमर की सीढ़ियों के पास जाकर शीशी



का काढ़ा पिया। उसकी सिकुड़ी जीभ और गला जलने लगा। एक असहनीय गहरे दर्द से उसका पूरा शरीर सिहर उठा। वह चिल्लाई, पर उसके गले से कोई आवाज़ नहीं निकली। और, वह बेहोश होकर गिर पड़ी।

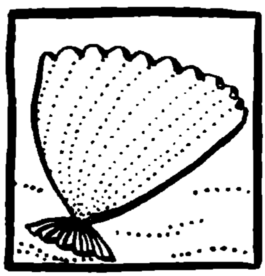
सुबह होने पर जब वह उठी तो उसे बहुत दर्द हुआ, लेकिन तभी उसने अपने राजकुमार को आते हुए देखा! राजकुमार की काली, सजल आँखें उसे उत्सुकता से निहार रही थीं। जलपरी ने देखा कि पूँछ की जगह अब उसके दो पतले और सुंदर पैर थे। क्योंकि उसके तन पर एक भी कपड़ा नहीं था, इसलिए उसने अपने शरीर को बालों से ढँक लिया।

"तुम कौन हो? तुम कहाँ से आई हो?" राजकुमार ने घुटनों के बल बैठते हुए पूछा।





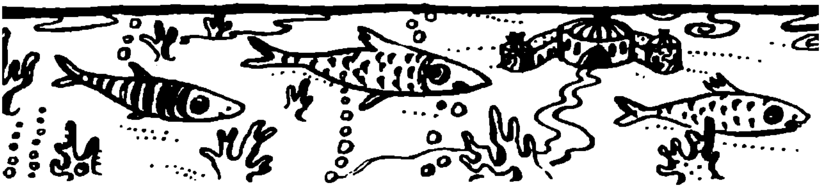
वह कोई जवाब देने की स्थिति में नहीं थी। परंतु वह राजकुमार को टकटकी लगाए देखती रही। जलपरी ने मनुष्य के पैरों पर पहली बार चलने की कोशिश की। चुड़ैल की बात सही निकली। हरेक क़दम धारदार चाकुओं पर चलने जैसा लग रहा था। परंतु उसने दर्द को अपने चेहरे पर नहीं झलकने दिया। उसने अपने बालों को चारों ओर लपेटा और मुस्कुराती रही।



महल में हरेक ने उसकी अद्‌भुत सुंदरता की तारीफ़ की। उसे पहनने के लिए क़ीमती कपड़े दिए गए और खाने के लिए अच्छा भोजन दिया गया। परंतु क्योंकि वह बोल नहीं सकती थी, इसलिए वह किसी का भी शुक्रिया अदा नहीं कर सकी।

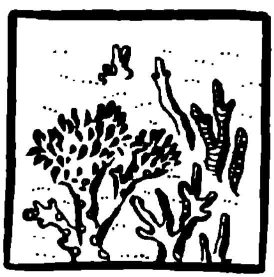
फिर बहुत सारी पार्टियाँ और जलसे हुए लेकिन नन्हीं जलपरी बहुत चाहते हुए भी अपने राजकुमार को कोई गीत नहीं सुना सकी। न ही वह अपने प्रेम को व्यक्त कर सकी। वह केवल दूसरे बेसुरे संगीतकारों के गीतों पर तालियाँ बजाती रही। जलपरी का समुद्री संगीत इन संगीतकारों के गीतों से कहीं अधिक सुरीला था।

गाना गाने के बजाए वह उनके लिए नाची। पूरे महल में उसके जैसा सुंदर नाच करने वाला





और कोई नहीं था। परंतु हरेक थिरकन पर, हर बार पाँव को ज़मीन पर पटकने पर, उसके पैरों में असहनीय पीड़ा होती। नाच ख़त्म होने के बाद जब सब लोग सोने चले गए तब वह समुद्र के पानी में बहुत देर तक अपने पैरों को छपछपाती रही, जिससे कि उसके जलते पैरों में कुछ ठंडक पड़े। उसे ऐसा लगा जैसे उसकी जलपरी बहनें, समुद्र के ऊपर अपने सिर उठाकर उसे बुला रही हों और उसे छूने के लिए अपने हाथ बढ़ा रही हों।



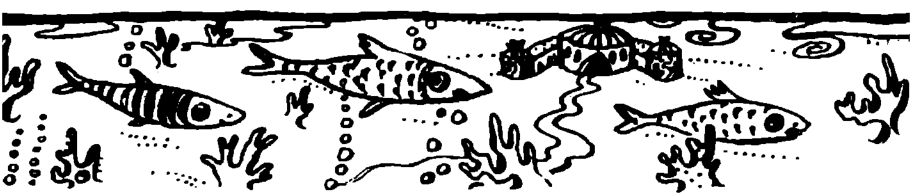


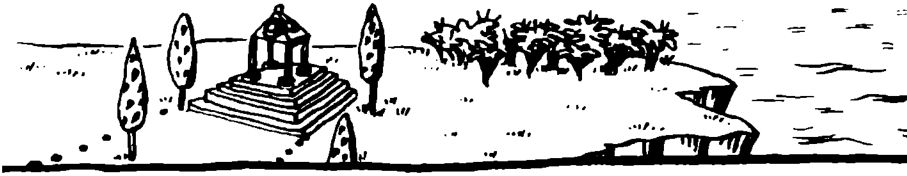
वह राजकुमार की सबसे प्रिय साथी बनी। वह पूरा दिन और शाम राजकुमार के साथ बिताती। वह उसे प्यार करता था, परंतु उस तरह से नहीं जैसे कि जलपरी चाहती थी।

"केवल एक ही लड़की है जिसके साथ मैं कभी शादी करूँगा," उसने एक शाम, जब वे दोनों बैठे थे, उसे बताया, "मुझे तुम्हें देखकर उसी लड़की की याद आती है जिसने मेरी जान बचाई थी!"

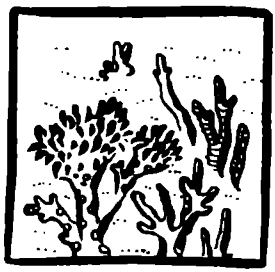
नन्हीं जलपरी उसे विनती भरी निगाहों से बस टकटकी लगाए देखती रही। क्या समुद्र में बेहोशी की हालत में राजकुमार ने अपनी आँखें खोली थीं? क्या उसने उसे देखा था?

"परंतु मैं कभी उसका प्यार नहीं जीत पाऊँगा," राजकुमार ने उदास होकर कहा, "वह मंदिर में रहती



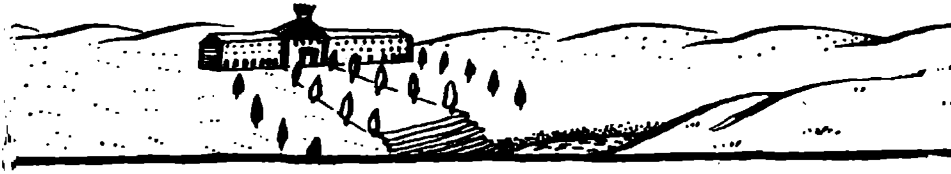


है। वह एक साधवी है और प्रार्थना में ही लीन रहती है। उसे किसी पति, शादी या घरबार से क्या लेना-देना? लेकिन मैं अपनी ज़िंदगी के लिए उसका ही एहसानमंद हूँ! अगर उसने समुद्र में से मुझे न खींचा होता तो मैं कब का डूब चुका होता।"



नहीं! नहीं! नन्हीं जलपरी ने उसे सच बताने की कोशिश की। देखो, मैंने तुम्हें समुद्र से निकाल कर तुम्हारी जान बचाई थी और अपना सारा दम लगाकर तुम्हें किनारे पर लाई थी।

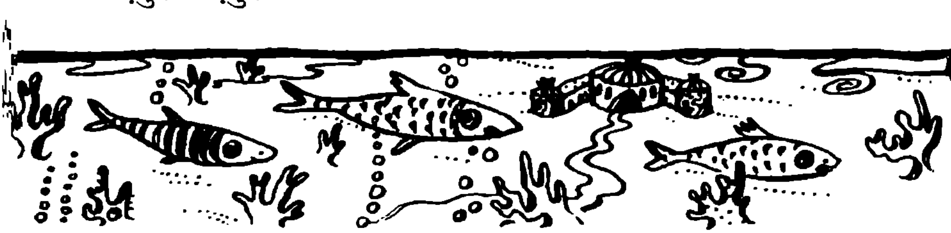


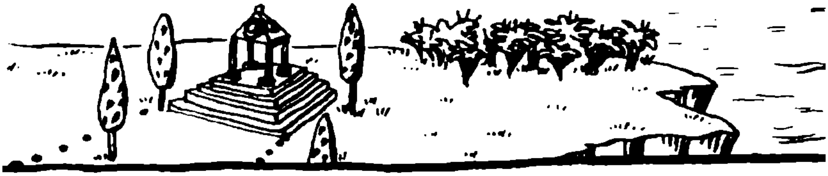


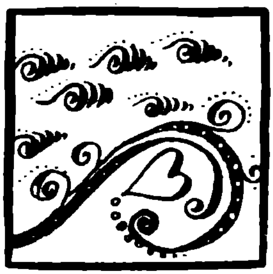
"मैं उस सुंदर चेहरे को कभी नहीं भूलूँगा!" राजकुमार ने ख़ुद से कहा और फिर उसने जलपरी की ओर मुँह किया, "तुम समझती हो, है न? तुम मुझे बेहद उदास लगती हो। ऐसा लगता है कि तुम अपने दिल और आत्मा से किसी को बेहद चाहती हो और वह चीज़ फिर भी तुम्हें मिल नहीं पा रही है?"

हाँ, एकदम ठीक, वह समझ गई!

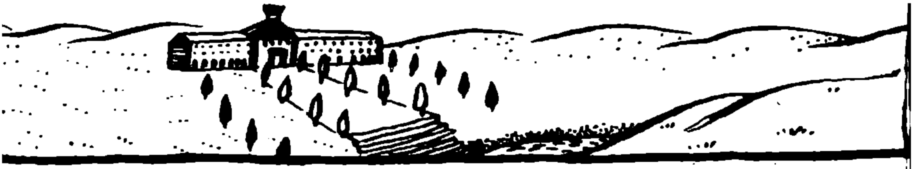
"अब मुझे पड़ोस के देश के राजा के निमंत्रण पर जाना है," राजकुमार ने शिकायत भरे लहजे में कहा, "वह चाहते हैं कि मैं उनकी बेटी से शादी करूँ! पर मैं अपनी मंदिर वाली लड़की के अलावा किसी और से शादी नहीं करूँगा। तुम मेरे साथ चलोगी न, मेरी प्रिय मित्र, जिससे मेरा समय ख़ुशी-ख़ुशी बीत सके?"







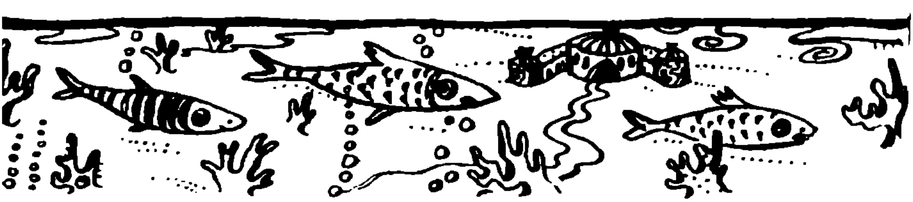
राजकुमार एक नए जहाज़ में इस यात्रा पर निकला। वह नन्हीं जलपरी के साथ जहाज़ की छत पर खड़ा होकर उसे समुद्र की अतल गहराइयों में छिपे ख़ज़ानों के बारे में बताने लगा। वह अद्‌भुत समुद्री जीवों, तलहटी में छिपी गहरी गुफाओं के रहस्य बता रहा था जिन्हें अच्छे-अच्छे गोताखोरों ने भी कभी नहीं देखा था। जलपरी राजकुमार की बातें सुनकर केवल थोड़ा-सा मुस्कुराई, क्योंकि वह समुद्र के रहस्यों के बारे में उससे कहीं अधिक जानती थी! वह चाहती थी



कि यात्रा जल्दी ही समाप्त हो जिससे कि वह राजकुमार के साथ अपना पूरा समय बिता सके। वह जानती थी कि इस विदेशी राजा की बेटी में राजकुमार को कोई रुचि नहीं थी।

जब राजकुमार का जहाज़ दूसरे देश के भव्य बंदरगाह में पहुँचा तो वहाँ उसके स्वागत में ख़ूब जश्न मनाया गया। बहुत सारे जुलूस निकले और पार्टियाँ हुईं। हर जलसे में राजकुमार ही मुख्य अतिथि होता। परंतु अभी तक राजा की बेटी का कोई नामोनिशान नहीं दिखा।

"वह जल्दी ही यहाँ आएँगी," नन्हीं जलपरी ने एक राजदरबारी को कहते हुए सुना, "और जब वह मंदिर से अपनी शिक्षा पूरी करके लौट आएँगी तब राजकुमार के साथ उनकी शादी अवश्य होगी।

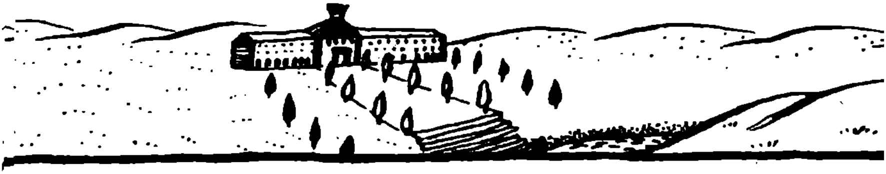




वह इतनी सुंदर हैं कि राजकुमार अवश्य उनसे प्रेम करने लगेंगे। और उन दोनों की बेहद सुंदर जोड़ी बनेगी! सुंदरता, शालीनता और धन-दौलत में वह राजकुमार से कुछ कम नहीं हैं।"

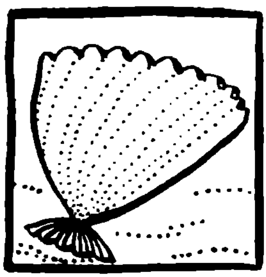
जब जलपरी ने 'मंदिर' का नाम सुना तो उसके शरीर में कँपकपी उठी। अब उसे मालूम पड़ा कि राजा की बेटी कौन है। उसे यह भी पता था कि राजकुमार उसे कितना चाहते थे। वह लड़की दो दिनों बाद घर आई और उसने शर्माते हुए अपने भावी पति का अभिनंदन किया। जब नन्हीं जलपरी ने उस लड़की का सुंदर चेहरा, उसके लंबे काले बाल और उसकी चमकीली आँखें देखीं तो उसका शरीर एक ठंडी सिहरन से काँप उठा। वह अब कभी भी राजकुमार का दिल नहीं जीत पाएगी। राजकुमार को उसके मन

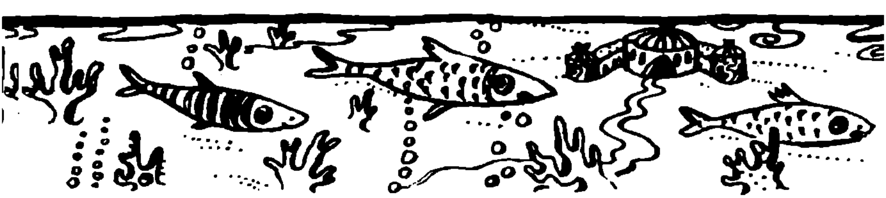


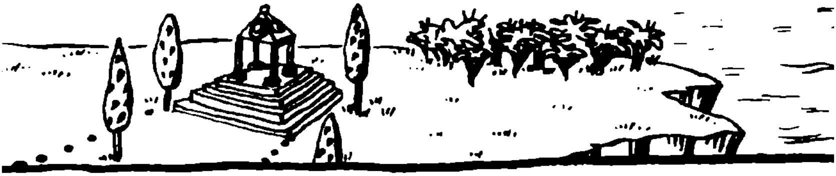


की मुराद—मंदिर वाली लड़की मिल जाएगी। वह लड़की—जिसे वह भूल से अपनी ज़िंदगी का रक्षक समझ बैठा था।

"तुम मेरे लिए ख़ुश हो, क्यों हो न, मेरी मित्र?" राजकुमार ने शादी से पहले दिन यह सवाल नन्हीं जलपरी से पूछा। "मैं बेहद ख़ुश हूँ। मैंने सपने में भी कभी ऐसा नहीं सोचा था! परंतु तुम हमेशा मेरी मित्र रहोगी—और मेरी पत्नी की भी! उसे भी तुम्हें मेरे समान ही प्यार करना चाहिए।"

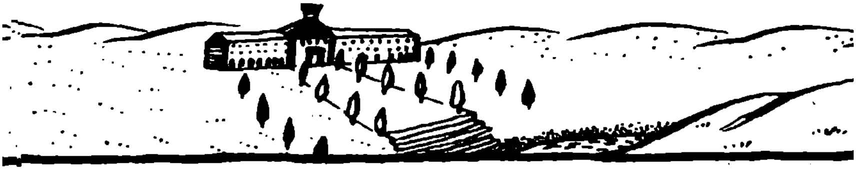






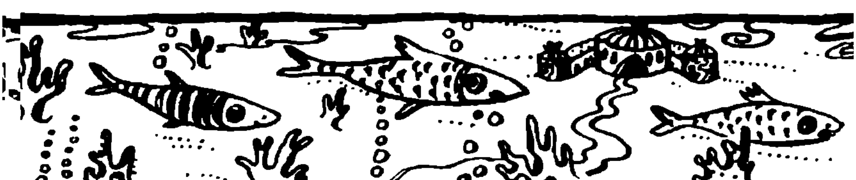
शादी बड़ी धूमधाम से हुई। घंटियाँ बजीं, नगाड़े और बाजे बजे और मंदिर को फूलों से सजाया गया। वर और वधू ने बेशक़ीमती कपड़े पहने, एक-दूसरे का हाथ थामा और कुछ समय बाद वे पति-पत्नी बन गए। नन्हीं जलपरी, रेशम और सोने से ढँकी थी और वह वधू की चादर उठाए थी। परंतु वह शादी का पूरा कार्यक्रम नहीं देख पाई। वह अब अपनी आने वाली मौत, और जो कुछ उसने पाया और खोया था उसके बारे में सोच रही थी।

उस रात राजकुमार के जहाज़ पर एक बड़ी पार्टी का आयोजन किया गया। जब नाच शुरू हुआ तो नन्हीं जलपरी को वह रात याद आई जब वह सबसे पहली बार अपने राजकुमार के



लिए नाची थी। वह एक बार और नाचेगी, आख़िरी बार! और फिर वह संगीत की धुनों पर थिरकने लगी, नाचने लगी और सभी लोगों ने उसे प्रोत्साहित करने के लिए नाचना बंद कर दिया। हर क़दम उसके शरीर में असहनीय दर्द कर रहा था, परंतु फिर भी उसने उसे पूरी तरह नज़रंदाज़ किया क्योंकि उसके दिल में उससे कहीं गहरा दर्द था।



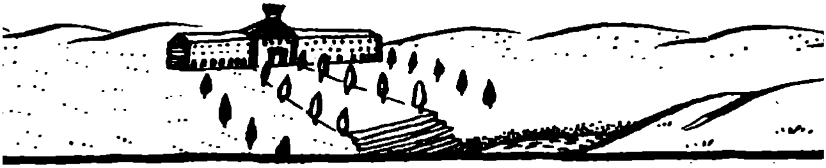


आख़िर में राजकुमार और उसकी नई वधू अपने कमरे में आराम करने गए और नन्हीं जलपरी अकेले जहाज़ की छत पर खड़ी होकर समुद्र को ताकने लगी। सूरज की पहली किरणों के साथ ही उसके प्राण-पखेरू भी उड़ जाएँगे। वह अपने प्रिय राजकुमार को अब दुबारा कभी नहीं देख पाएगी और न ही उसकी आत्मा कभी अमर हो सकेगी।

तभी समुद्र की लहरों के ऊपर उसे कुछ झिलमिलाते चेहरे दिखे और कुछ हाथ उसे अपनी ओर बढ़ते नज़र आए। वह उसकी बहनें थीं! वह उनकी तरफ देखती रही—वे देखने में कितनी अजीब लग रही थीं! उन्होंने अपने पूरे बाल कटवा दिए थे!

"बहन!" वे चिल्लायीं, "हमने अपने बाल उस

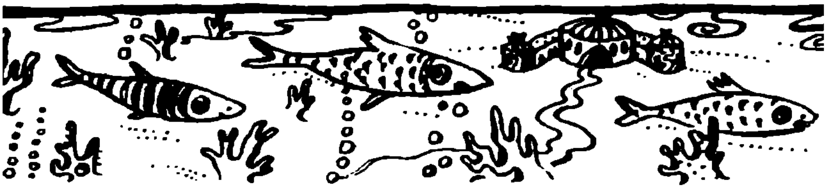


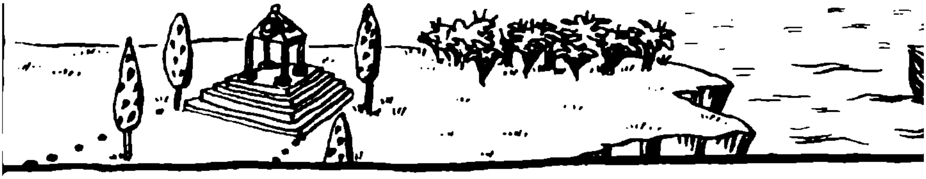


समुद्री-चुड़ैल को दे डाले हैं जिससे वह हमारी कुछ मदद कर सके! जो हम कहें तुम वैसा ही करो!" तभी जलपरी को स्टील पर चाँदनी की चमक दिखाई पड़ी। "लो, यह चाकू लो! सुबह होने से पहले तुम इसे राजकुमार के सीने में घुसा देना। जब उसका ख़ून तुम्हारे पैरों पर पड़ेगा तो तुम्हारे पैर ग़ायब होकर जलपरी की पूँछ बन जाएँगे। उसके बाद तुम अपने समुद्री घर में लौट सकोगी और तीन सौ साल तक जीवित रह सकोगी! अब जल्दी करो! देखो, सुबह होने में अब कुछ ही देर बाक़ी है?"

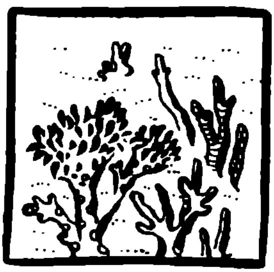
नन्हीं जलपरी ने चाकू उठाया और तभी उसकी बहनें समुद्र के पानी में लुप्त हो गयीं।

न चाहते हुए भी वह राजकुमार के कमरे में



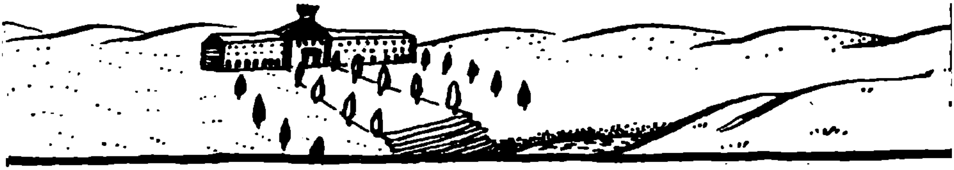


घुसी। वहाँ वह अपनी सुंदर पत्नी के साथ सो रहा था। जब नन्हीं जलपरी ने उसे चूमा तो राजकुमार ने नींद में अपनी प्रेयसी का नाम ही बुदबुदाया। राजकुमार अपनी प्रेयसी के अलावा और किसी की नहीं सोच रहा था!



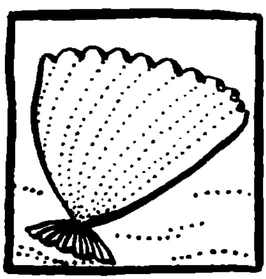
नन्हीं जलपरी ने चाकू उठाया—वह कितना भारी था, और कितना धारदार था! उसने चाकू से सही निशाना बनाया। एक क्षण के लिए जलपरी ने

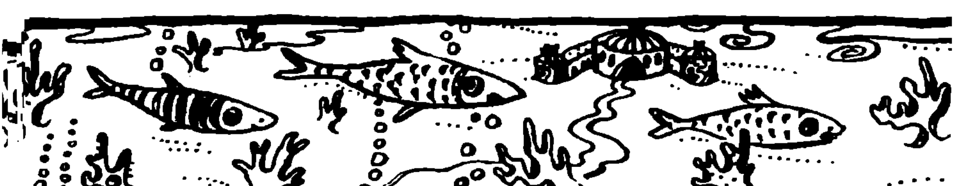




उस असहनीय और भीषण दर्द को याद किया जो उसने राजकुमार के लिए सहे थे।

फिर उसने अपना निर्णय बदला और अपना हाथ नीचे कर लिया। उसके बाद वह दौड़ कर जहाज़ की छत पर भागी और अपनी पूरी ताक़त लगाकर उसने चाकू को समुद्र में फेंक दिया। एक पल के लिए सूरज की पहली किरणें काटता हुआ वह हवा में लटका रहा।





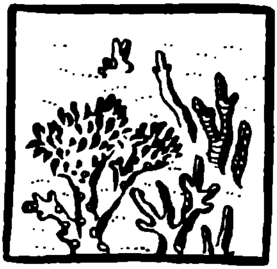
उसने तुरंत समुद्र में कूद लगाई और वहाँ उसका शरीर समुद्री फेन में बदल गया।

जब सूरज उगा तो उसकी धूप से फेन गर्म हुआ। इससे जलपरी मृत्यु की ठंड से बच पाई। उसकी जगह उसे सूरज और हवा में कुछ बादलों जैसी आकृतियाँ दिखीं और उसे कुछ रुपहली आवाज़ें सुनाई दीं।

"मैं कहाँ जा रही हूँ?" उसने पूछा।

एक आवाज़ ने उत्तर दिया, "तुम इस समय हवा की बेटियों के साथ हो! देखो ग़रीब जलपरी, तुम्हारी आत्मा तो अमर नहीं हो सकी, परंतु तुम ने सच्ची और पूरी लगन से किसी चीज़ की कामना की थी। और अब तुम्हें अपने अच्छे काम का

जलपरी ने देखा कि अब उसका रंग-रूप एकदम नया था, बिलकुल बादलों की तरह और पारदर्शी, जैसे वह फेन की बनी हो। वे सभी साथ-साथ हल्के बुलबुलों की तरह हँसते और तैरते रहे।



जलपरी ने आख़िरी बार नीचे जहाज़ की ओर देखा। उसने सोचा कि राजकुमार अभी भी अपनी प्रेयसी के गले में बाँहें डाले पड़े होगा। उसे कभी

उसके लिए क्या-क्या किया।

"चलो बहनो! ऊँचे उड़ो!" रुपहली आवाज़ ने कहा, "क्योंकि हमारी दुनिया इतनी ख़ूबसूरत है जिसकी तुम कभी कल्पना भी नहीं कर सकती हो।"

फिर नन्हीं जलपरी ने सुनहरे प्रकाश में झाँका और अपनी नई बहनों को देखा जो हवा की बेटियाँ थीं। फिर उसने जहाज़ और राजकुमार की ओर देखा। उसे अब राजकुमार से हमेशा के लिए विदा लेनी चाहिए।

"अलविदा!" उसने हल्के से कहा और जीवन में पहली बार उसकी आँखों से आँसू बह निकले।

चित्रांकन
बी विली

बहुत समय पहले की बात है। गहरे नीले समुद्र के नीचे एक सुंदर-सा महल था। उसमें रहती थी एक नन्हीं जलपरी!

एक दिन अचानक एक राजकुमार समुद्र के पानी में खींचता चला आया। जलपरी ने उसकी जान बचायी और फिर...

ISBN: 81-7655-094-9
मूल्य: 50 रुपये